Shreemad Bhagawad Geeta: श्रीमद् - भगवद् - गीता

अथ राजविद्या राजगुह्य योगो नाम नवमोऽध्यायः॥

श्री भगवान् उवाच।

इदम् तु ते गुह्यतमम् प्रवक्ष्यामि अनसूयवे।

ज्ञानम् विज्ञानसहितम् यत् ज्ञात्वा मोक्ष्यसे अशुभात्॥ ९ - १ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
इदम्	Idam	this	इस	हे
तु	Tu	indeed	कि / क्योंकि	की
ते	Te	to you	तुम जैसे	तुला
गुह्यतमम्	Guhyatamam	the greatest secret	परम गोपनीय	अत्यंत गुप्त
प्रवक्ष्यामि	Pravakshyaami	I shall declare	भलीभाँति कहूँगा	मी नीटपणे सांगेन
अनसूयवे	Anasuuyave	one who does not cavil	दोषदृष्टि रहित भक्तके लिये	निर्मत्सरा ! (अर्जुना !)
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
विज्ञानसहितम्	Vidnyaana-Sahitam	together with wisdom	विज्ञान सहित	विज्ञानयुक्त
यत्	Yat	which	जिसको	जे
ज्ञात्वा	Dnyaatvaa	having known	जानकर	जाणल्यावर
मोक्ष्यसे	Mokshyase	you shall become free	मुक्त हो जाओगे	दूर राहशील
अशुभात्	Ashubhaat	from evil	दुःखरूप संसार से	(तू) अशुभ स्थितीपासून

अन्वय :- यत् ज्ञात्वा (त्वम्) अशुभात् मोक्ष्यसे , (तत्) तु इदम् गुह्यतमम् विज्ञानसहितम् ज्ञानम् अनसूयवे ते प्रवक्ष्यामि ॥ ९ - १ ॥

English translation:-

The Blessed Lord said, "To you who do not cavil, verily, I shall declare the greatest secret – knowledge together with wisdom – which having known, you shall become free from evil."

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवान् बोले, " तुम जैसे दोषदृष्टि रहित भक्त के लिये , इस परम गोपनीय विज्ञान सहित ज्ञान को , मैं पुनः भलीभाँति कहूँगा, जिस को जानकर तुम दुःखरूप संसार से मुक्त हो जाओगे ।"

मराठी भाषान्तर :-

श्री भगवान म्हणाले , " जे जाणल्यावर तू अशुभ स्थितीपासून दूर राहशील असे ते अत्यंत गुप्त आणि विज्ञानयुक्त ज्ञान तू निर्मत्सर असल्यामुळे तुला मी सांगेन ".

विनोबांची गीताई :-

आतां गुपित हें थोर सांगतों निर्मळा तुज
विज्ञानें कासिलें ज्ञान अशुभांतूनि सोडवी ॥ ९ - १ ॥

राजविद्या राजगुह्यम् पवित्रम् इदम् उत्तमम् ।

प्रत्यक्ष अवगमम् धर्म्यम् सुसुखम् कर्तुम् अव्ययम् ॥ ९ - २ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
राजविद्या	Raajavidyaa	royal knowledge / the king of sciences	सब विद्याओंका राजा	सर्व विद्यांमध्ये श्रेष्ठ
राजगुह्यम्	Raajaguhyam	royal secret / kingly secret	सब गोपनीयोंका राजा	अत्यंत गुप्त
पवित्रम्	Pavitram	purifier	अति पवित्र	पवित्र
इदम्	Idam	this	(यह) विज्ञानसहित ज्ञान	हे (ज्ञान)
उत्तमम्	Uttamam	of the highest order	अति उत्तम	उत्तम
प्रत्यक्ष - अवगमम्	Pratyaksha - Avagamam	realizable by direct intuition	प्रत्यक्ष फलवाला	प्रत्यक्ष अनुभवास येणारे
धर्म्यम्	Dharmyam	according to righteousness	धर्मयुक्त	धर्मयुक्त
सुसुखम्	Susukham	very easy	बडा सुगम	अतिशय सुगम
कर्तुम्	Kartum	to perform	साधन करनेमें	(साधन) करण्यास
अव्ययम्	Avyayam	imperishable	अविनाशी	अविनाशी

अन्वय :- इदम् (ज्ञानम्) राजविद्या , राजगुह्यम् , उत्तमम् , पवित्रम् , अव्ययम् , प्रत्यक्ष - अवगमम् , कर्तुम् , सुसुखम् , धर्म्यम् (च अस्ति) ॥ ९ - २ ॥

English translation:-

The sovereign science, the sovereign secret, the supreme purifier is this; directly realizable by intuition, in accordance with righteousness / dharma, very easy to practise and it is imperishable.

हिन्दी अनुवाद :-

यह विज्ञानसहित ज्ञान सब विद्याओं का राजा , सब गोपनीयों का राजा , अति पवित्र , अति उत्तम , प्रत्यक्ष फलवाला धर्मयुक्त , साधन करने में बडा सुगम और अविनाशी है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे ज्ञान सर्व विद्यांमध्ये श्रेष्ठ , अत्यंत गुप्त , पवित्र , उत्तम , प्रत्यक्ष अनुभवास येणारे , धर्मानुकूल , आचरणास सुखकारक आणि अविनाशी असे आहे .

विनोबांची गीताई :-

राज – विद्या महा - गुह्य उत्तमोत्तम पावन

प्रत्यक्ष हें सुखें लाभे धर्म - सार सनातन ॥ ९ - २ ॥

अश्रद्धधानाः पुरुषाः धर्मस्य अस्य परंतप ।

अप्राप्य माम् निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ९ - ३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अश्रद्धधानाः	Ashraddha-dhaanaaH	devoid of faith (Shraddhaa)	श्रद्धारहित	श्रद्धारहित
पुरुषाः	PuruShaaH	men	पुरुष	पुरुष
धर्मस्य	Dharmasya	of dharma (supreme knowledge)	धर्ममें	धर्माचे
अस्य	Asya	of this	इस उपर्युक्त	या
परंतप	Parantapa	O Arjuna, the scorcher of foes	हे अर्जुन !	हे शत्रुतापदायक अर्जुना !
अप्राप्य	Apraapya	without attaining	प्राप्त न होकर	प्राप्त करून न घेता
माम्	Maam	me	मुझको	मला
निवर्तन्ते	Nivartante	return	भ्रमण करते रहते हैं	फिरत राहतात
मृत्युसंसारवर्त्मनि	Mrutyu-Samsaar-Vartmani	in the path of the mortal world	मृत्युरूप संसारचक्रमें	मृत्युरूप संसारचक्रात

अन्वय :-

हे परंतप ! अस्य धर्मस्य अश्रद्धधानाः पुरुषाः माम् अप्राप्य मृत्युसंसारवर्त्मनि निवर्तन्ते ॥ ९ - ३ ॥

English translation:-

O Arjuna, men devoid of Shraddha (faith founded on knowledge) in this dharma (supreme knowledge), without attaining Me, return to the path of the mortal world.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! इस उपर्युक्त धर्म में श्रद्धारहित पुरुष मुझ को प्राप्त न होकर मृत्युरूप संसार चक्र में भ्रमण करते रहते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! या (आत्मज्ञानरूप) धर्मावर श्रद्धा न ठेवणारे लोक, मला (ईश्वराला) प्राप्त न होता मृत्युरूप संसारमार्गात परत येतात.

विनोबांची गीताई :-

लोक नास्तिक हा धर्म अश्रद्धेनें न सेविती
मृत्यूची धरिती वाट संसारीं मज सोडुनी ॥ ९ - ३ ॥

मया ततम् इदम् सर्वम् जगत् अव्यक्तमूर्तिना ।

मत्स्थानि सर्वभूतानि न च अहम् तेषु अवस्थितः ॥ ९ - ४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मया	Mayaa	by Me	मुझ	मी
ततम्	Tatam	pervaded	परिपूर्ण है	(परिपूर्णपणे) व्यापलेले
इदम्	Idam	this	यह	हे
सर्वम्	Sarvam	all	सब	सर्व
जगत्	Jagat	world / universe	जगत्	जग
अव्यक्तमूर्तिना	Avyakta-Muurtinaa	by the unmanifested form	निराकार परमात्मासे	निराकार परमात्म्याकडून
मत्स्थानि	Matsthaani	(they) exist in Me	मेरे अन्तर्गत संकल्पके आधार स्थित हैं	माझ्यातील (संकल्पाच्या आधारावर स्थित आहेत)
सर्वभूतानि	Sarva-Bhuutaani	all beings	सब भूत	सर्व प्राणिमात्र
न	Na	not	नहीं	नाही
च	Cha	and	और	परंतु
अहम्	Aham	I	मैं	मी
तेषु	TeShu	in them	उनमें (किन्तु वास्तवमें)	(वास्तविकपणे) त्यांच्यामध्ये
अवस्थितः	AvasthitaH	placed / exist	स्थित हूँ	स्थित

अन्वय :-

अव्यक्तमूर्तिना मया इदम् सर्वम् जगत् ततम् । सर्वभूतानि मत्स्थानि (सन्ति) अहम् च तेषु न अवस्थितः (अस्मि) ॥ ९ - ४ ॥

English translation:-

All this universe is pervaded by Me in My unmanifested form; all being dwell in Me but I do not dwell in them.

हिन्दी अनुवाद :-

मुझ निराकार परमात्मा से यह सब जगत् (जल से बरफ के सदृश) परिपूर्ण है और सब भूत मेरे अन्तर्गत संकल्प के आधार स्थित हैं, किन्तु वास्तव में मैं उन में स्थित नहीं हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

मी आपल्या अव्यक्तस्वरूपाने हे सर्व जग व्यापले असून सर्व प्राणिमात्र माझ्या ठायी आहेत, पण मी त्यांच्या ठायी नाही.

विनोबांची गीताई :-

मीं चि अव्यक्त - रुपानें जग हें व्यापिलें असे
माझ्यांत राहती भूतें मी न भूतांत राहतों ॥ ९ - ४ ॥

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगम् ऐश्वरम् ।

भूतभृत् न च भूतस्थः ममात्मा भूतभावनः ॥ ९ - ५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं हैं (किन्तु)	नाहीत
च	Cha	and	और	आणि
मत्स्थानि	Mat-Sthaani	Dwelling in Me	मुझमें स्थित	माझ्यामध्ये स्थित
भूतानि	Bhuutaani	beings	वे सब भूत	सर्व प्राणिमात्र
पश्य	Pashya	behold	देख	(तू) पाहा
मे	Me	My	मेरी	माझी
योगम्	Yogam	Yoga	योगशक्तिको	योगशक्ती
ऐश्वरम्	Aishvaram	divine	ईश्वरीय	ईश्वरीय
भूतभृत्	Bhuutabhrut	supporting beings	भूतोंका धारण पोषण करनेवाला	प्राणिमात्रांचे धारण पोषण करणारा
न	Na	not	नहीं है	नाही
च	Cha	and	और	आणि
भूतस्थः	BhuutasthaH	dwelling in beings	भूतोंमें स्थित	प्राणिमात्रांत स्थित
मम - आत्मा	Mama-Aatmaa	My Self	मेरा आत्मा (वास्तवमें)	(असतानाही) माझा आत्मा (वस्तुतः)
भूतभावनः	Bhuuta-BhaavanaH	bringing forth beings	भूतोंको उत्पन्न करनेवाला	प्राणिमात्रांना उत्पन्न करणारा

अन्वय :-

भूतानि च मत्स्थानि न (सन्ति)। मे ऐश्वरम् योगम् पश्य। (अहम्) भूतभृत् (अपि) भूतस्थः न। मम आत्मा च भूतभावनः (अस्ति) ॥ ९-५ ॥

English translation:-

Nor do the beings dwell in Me, behold My divine Yoga! Bringing forth and supporting beings, My Self does not dwell in them.

हिन्दी अनुवाद :-

वे सब भूत मुझ में स्थित नहीं हैं; किन्तु मेरी ईश्वरीय योगशक्ति को तुम देखो कि भूतों का धारण-पोषण करनेवाला और भूतों को उत्पन्न करनेवाला भी मेरा आत्मा वास्तव में भूतों में स्थित नहीं है।

मराठी भाषान्तर :-

सर्व प्राणिमात्र वस्तुतः माझ्यामध्ये नाहीत, असे हे माझे ईश्वरीय स्वरूप तू पहा. मी सर्व प्राणिमात्रांचे पालनपोषण करणारा असूनही, मी त्यांच्यात नाही; तरी माझा आत्मा सर्व प्राणिमात्रांची उत्पत्ती करणारा आहे.

विनोबांची गीताई :-

न वा भूतें हि माझ्यांत माझा हा दिव्य योग कीं
करितों धरितों भूतें परी त्यांत नसें कुठें ॥ ९-५ ॥

यथा आकाशस्थितः नित्यम् वायुः सर्वत्रगः महान् ।

तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानि इति उपधारय ॥ ९ - ६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यथा	Yathaa	as	जैसे (आकाशसे उत्पन्न)	ज्याप्रमाणे (आकाशातून उत्पन्न झालेला)
आकाशस्थितः	Aakaasha-SthitaH	resting in space	आकाशमें ही स्थित है	आकाशामध्येच स्थित असतो
नित्यम्	Nityam	always	सदा	नेहमीच
वायुः	VaayuH	wind	वायु	वायू
सर्वत्रगः	SarvatragaH	moving everywhere	सर्वत्र संचार करनेवाला	सर्वत्र संचार करणारा
महान्	Mahaan	mighty	महान्	महान
तथा	Tathaa	likewise / similarly	वैसे ही (मेरे संकल्पद्वारा उत्पन्न होनेसे)	त्याप्रमाणे (माझ्या संकल्पातून उत्पन्न होणारी)
सर्वाणि	SarvaaNi	all	सम्पूर्ण	संपूर्ण
भूतानि	Bhuutaani	beings	भूत	प्राणिमात्र
मत्स्थानि	Matsthaani	rest in Me	मुझमें स्थित हैं	माझ्यामध्ये स्थित आहेत
इति	Iti	thus	ऐसा	असे
उपधारय	Upadhaaraya	know	तुम जान लो	तू जाण

अन्वय :-

यथा सर्वत्रगः महान् वायुः नित्यम् आकाशस्थितः (अस्ति), तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानि (सन्ति), इति (त्वम्) उपधारय ॥ ९ - ६ ॥

English translation:-

As the mighty wind, moving everywhere always rests in space (within the boundary of this ever expanding Universe), similarly know that all beings rest in Me.

हिन्दी अनुवाद :-

जैसे आकाश से उत्पन्न सर्वत्र संचार करनेवाला महान् वायु सदा आकाश में ही स्थित है, वैसे ही मेरे संकल्प द्वारा उत्पन्न होने से सम्पूर्ण भूत मुझ में स्थित हैं, ऐसा तुम जान लो।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याप्रमाणे सर्वत्र संचार करणारा महान वायू नेहमी आकाशात स्थित राहतो, त्याप्रमाणे सर्व प्राणिमात्र माझ्यामध्ये स्थित आहेत असे तू जाण.

विनोबांची गीताई :-

आकाशांत महा - वायु सदा सर्वत्र राहतो
माझ्यांत सगळी भूतें राहती ज्ञाण तूं तशीं ॥ ९ - ६ ॥

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिम् यान्ति मामिकाम् ।

कल्पक्षये पुनः तानि कल्पादौ विसृजामि अहम् ॥ ९ - ७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्वभूतानि	Sarva-Bhuutaani	all beings	सब भूत	सर्व प्राणिमात्र
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
प्रकृतिम्	Prakrutim	to nature	प्रकृतिको	प्रकृतीप्रत
यान्ति	Yaanti	go	प्राप्त होते हैं अर्थात् प्रकृतिमें लीन होते हैं	प्राप्त होतात (प्रकृतीमध्ये लीन होतात)
मामिकाम्	Maamikaam	My	मेरी	माझ्या
कल्पक्षये	Kalpakshaye	at the end of the time cycle	कल्पोंके अन्तमें	कल्पाच्या अंती
पुनः	PunaH	again	और फिर	पुन्हा
तानि	Taani	them	उनको	त्यांना
कल्पादौ	Kalpaadau	at the beginning of the time cycle	कल्पोंके आदिमें (आरंभमें)	कल्पाच्या आरंभी
विसृजामि	Visrujaami	bring forth	रचता हूँ	उत्पन्न करतो
अहम्	Aham	I	मैं	मी

अन्वय :-

हे कौन्तेय ! सर्वभूतानि कल्पक्षये मामिकाम् प्रकृतिम् यान्ति । पुनः अहम् कल्पादौ तानि विसृजामि ॥ ९ - ७ ॥

English translation:-

O Arjuna, at the end of time cycle all beings enter My Prakriti / Nature; at the beginning of time cycle I bring forth / recreate / regenerate them.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! कल्पों के अन्त में सब भूत मेरी प्रकृति को प्राप्त होते हैं अर्थात् प्रकृति में लीन होते हैं और कल्पों के आदि में (आरंभ में) उन को मैं फिर रचता हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! कल्पाच्या शेवटी सर्व प्राणिमात्र माझ्या प्रकृतीमध्ये लय पावतात आणि मीच त्यांना कल्पाच्या आरंभी पुन्हा उत्पन्न करतो .

विनोबांची गीताई :-

कल्पांतीं निजवीं भूतें मी माझ्या प्रकृतीमधें
कल्पारंभीं पुन्हां सारीं मी चि जागवितों स्वयें ॥ ९ - ७ ॥

प्रकृतिम् स्वाम् अवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः ।

भूतग्रामम् इमम् कृत्स्नम् अवशम् प्रकृतेः वशात् ॥ ९ - ८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
प्रकृतिम्	Prakrutim	Nature	प्रकृतीको	प्रकृती
स्वाम्	Svaam	My own	अपनी	स्वतःच्या
अवष्टभ्य	Avashtabhya	having animated	अंगीकार करके	अंगीकार करून
विसृजामि	Visrujaami	I send forth	मैं रचता हूँ	मी उत्पन्न करतो
पुनः	PunaH	again	बार	पुन्हा
पुनः	PunaH	again	बार (उनके कर्मोंके अनुसार)	पुन्हा (त्यांच्या कर्मानुसार)
भूतग्रामम्	Bhuuta-Graamam	multitude of beings	भूतसमुदायको	प्राणिमात्रांचा समुह
इमम्	Imam	this	इस	या
कृत्स्नम्	Krutsnam	all	सम्पूर्ण	संपूर्ण
अवशम्	Avasham	helpless	परतन्त्र हुए	परतंत्र झालेल्या
प्रकृतेः	PrakruteH	of nature	स्वभावके	स्वभावाने
वशात्	Vashaat	by force	बलसे	सामर्थ्याने

अन्वय :-

(अहम्) स्वाम् प्रकृतिम् अवष्टभ्य प्रकृतेः वशात् अवशम् इमम् कृत्स्नम् भूतग्रामम् पुनः पुनः विसृजामि ॥ ९ - ८ ॥

English translation:-

Animating My own nature, I bring forth again and again all these multitude of beings, helpless by the force of nature.

हिन्दी अनुवाद :-

अपनी प्रकृती को अंगीकार कर के स्वभाव के बल से परतन्त्र हुए इस सम्पूर्ण भूतसमुदाय को बार - बार उन के कर्मों के अनुसार रचता हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

माझ्या प्रकृतीचा आश्रय घेऊन , स्वभाववशात् परतंत्र झालेल्या या सर्व प्राणिमात्रांना , मी पुन्हा पुन्हा उत्पन्न करतो .

विनोबांची गीताई :-

हातीं प्रकृति घेऊनि जागवीं मी पुन्हां पुन्हां
भूतांचा संघ हा सारा प्रकृतीच्या अधीन ज़ो ॥ ९ - ८ ॥

न च माम् तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ।

उदासीनवत् आसीनम् असक्तम् तेषु कर्मसु ॥ ९ - ९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं	नाहीत
च	Cha	and	और	आणि
माम्	Maam	Me	मुझ परमात्माको	मला (परमात्म्याला)
तानि	Taani	these	वे	ती
कर्माणि	KarmaaNi	acts	कर्म	कर्मे
निबध्नन्ति	Nibadhnanti	bind	बाँधते	बंधनात पाडतात
धनंजय	Dhananjaya	O Arjuna	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
उदासीनवत्	Udaasiinavat	like indifferent one	उदासीनके सदृश	उदासीनाप्रमाणे
आसीनम्	Aaseenam	remaining	स्थित	स्थित असणाऱ्या
असक्तम्	Asaktam	unattached	आसक्तिरहित	आसक्तिरहित
तेषु	TeShu	in those	उन	त्या
कर्मसु	Karmasu	acts	कर्मोंमें	कर्मांमध्ये

अन्वय :-

हे धनंजय ! तेषु कर्मसु असक्तम् उदासीनवत् आसीनम् माम् तानि कर्माणि च न निबध्नन्ति ॥ ९ - ९ ॥

English translation:-

O Arjuna, nor do these acts bind Me, remaining like one unconcerned and unattached to those acts.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! उन कर्मों में आसक्तिरहित और उदासीन के सदृश स्थित मुझ परमात्मा को वे कर्म नहीं बाँधते ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! या कर्मात माझी आसक्ती नसल्यामुळे , उदासीनाप्रमाणे राहणाऱ्या मला , ती कर्मे बंधनात टाकत नाहीत .

विनोबांची गीताई :-

परी ही सगळी कर्मे बांधूं न शकती मज
उदासीनपरी राहें अनासक्त म्हणूनियां ॥ ९ - ९ ॥

मया अध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते स - चर - अचरम् ।

हेतुना अनेन कौन्तेय जगत् विपरिवर्तते ॥ ९ - १० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मया	Mayaa	By Me	मुझ	माझ्या
अध्यक्षेण	AdhyaksheNa	by presiding over as a supervisor	अधिष्ठाताके सकाशसे	देखरेखीनुसार
प्रकृतिः	PrakrutiH	nature	प्रकृति	प्रकृती
सूयते	Sooyate	produces	रचती है	उत्पन्न करते
स – चर - अचरम्	Sa – Chara - Acharam	the moving and the unmoving	चराचरसहित सर्व जगतको	चराचरासहित सर्व (जग)
हेतुना	Hetunaa	by cause	हेतुसे ही	(आणि म्हणूनच) कारणास्तव
अनेन	Anena	by this	इस	या
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna	हे अर्जुन	हे अर्जुना !
जगत्	Jagat	the world	यह संसारचक्र	हे संसारचक्र
विपरिवर्तते	Viparivartate	revolves	घूम रहा है	फिरत राहते

अन्वय :-

हे कौन्तेय ! मया अध्यक्षेण प्रकृतिः स - चर - अचरम् सूयते , अनेन हेतुना जगत् विपरिवर्तते ॥ ९ - १० ॥

English translation:-

O Arjuna! By Me presiding over, nature produces the moving and the unmoving; due to this, the world revolves.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! मुझ अधिष्ठाता के सकाश से प्रकृति चराचर सहित सर्व जगत को रचती है और इस हेतु से ही यह संसारचक्र घूम रहा है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! माझ्या अध्यक्षतेने (आश्रयाने) प्रकृती चेतन आणि अचेतन जग उत्पन्न करते . यामुळेच हे संसारचक्र फिरत राहते .

विनोबांची गीताई :-

साक्षी मी प्रकृति द्वारा उभारीं सचराचर
त्यामुळें सर्व सृष्टीची ही घडामोड होतसे ॥ ९ - १० ॥

अवजानन्ति माम् मूढाः मानुषीम् तनुम् आश्रितम् ।

परम् भावम् अजानन्तः मम भूतमहेश्वरम् ॥ ९ - ११ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अवजानन्ति	Avajaananti	disregard	तुच्छ समझते हैं	तुच्छ समजतात (सामान्य माणसाप्रमाणे माझी अवहेलना करतात)
माम्	Maam	Me	मुझ	मला
मूढाः	MuuDhaaH	fools	मूढलोग	अज्ञानी
मानुषीम्	MaanuShim	human	मनुष्यका	हे मनुष्याचे
तनुम्	Tanum	form	शरीर	शरीर
आश्रितम्	Aashritam	refuged in / dwelling	धारण करनेवाले	धारण करणाऱ्या
परम्	Param	supreme	परम	श्रेष्ठ
भावम्	Bhaavam	state /nature	भावको	भावाला
अजानन्तः	AjaanantaH	not knowing	न जाननेवाले	न जाणणारे
मम	Mama	My	मेरे	मला
भूतमहेश्वरम्	Bhuuta-maheshvaram	the great Lord of being	सम्पूर्ण भूतोंके महान् ईश्वरको	संपूर्ण प्राणिमात्रांचा महान ईश्वर असणाऱ्या

अन्वय :- भूतमहेश्वरम् मम परम् भावम् अजानन्तः मूढाः मानुषीम् तनुम् आश्रितम् माम् अवजानन्ति ॥ ९ - ११ ॥

English translation:-

Fools disregard Me dwelling in the human form, not knowing My Supreme nature, the great Lord of beings.

हिन्दी अनुवाद :-

मेरे परमभाव को न जाननेवाले मूढलोग मनुष्य का शरीर धारण करनेवाले मुझ सम्पूर्ण भूतों के महान् ईश्वर को तुच्छ समझते हैं अर्थात् अपनी योगमाया से संसार के उद्धार के लिये मनुष्यरूप में विचरते हुए मुझ परमेश्वर को साधारण मनुष्य मानते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

मी सर्व प्राणिमात्रांचा महान ईश्वर आहे. हा माझा श्रेष्ठ भाव न जाणता ; अविवेकी , मूर्ख लोक मानवी देह धारण केलेल्या माझा (ईश्वराचा) अनादर करतात.

विनोबांची गीताई :-

मज़ मानव रूपांत तुच्छत्वें मूढ देखती

नेणूनि थोरलें रूप जें माझें विश्व चालक ॥ ९ - ११ ॥

मोघाशाः मोघकर्माणः मोघज्ञानाः विचेतसः ।

राक्षसीम् आसुरीम् च एव प्रकृतिम् मोहिनीम् श्रिताः ॥ ९ - १२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मोघाशाः	Mogha-AashaaH	of vain hopes	(वे) व्यर्थ आशा	व्यर्थ आशा करणारे
मोघकर्माणः	Mogha-KarmaaNaH	of vain actions	व्यर्थ कर्म	व्यर्थ कर्म करणारे
मोघज्ञानाः	Mogha-DnyaanaaH	of vain knowledge	और व्यर्थ ज्ञानवाले	व्यर्थ ज्ञान असणारे
विचेतसः	VichetasaH	senseless	विक्षिप्तचित्त अज्ञानीजन	चंचल चित्त असणारे (अज्ञानी लोक)
राक्षसीम्	Raakshasiim	devilish	राक्षसी	राक्षसी
आसुरीम्	Aasuriim	undivine	आसुरी	आसुरी
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	verily	ही	केवळ
प्रकृतिम्	Prakrutim	nature	प्रकृतीको	प्रकृती
मोहिनीम्	Mohineem	deceitful / delusive	मोहिनी	संभ्रमात पाडणाऱ्या
श्रिताः	ShritaaH	possessing	धारण किये रहते हैं	आश्रय घेऊन राहतात

अन्वय :-

(ते) मोघाशाः मोघकर्माणः मोघज्ञानाः विचेतसः मोहिनीम् राक्षसीम् आसुरीम् प्रकृतिम् च एव श्रिताः ॥ ९ - १२ ॥

English translation:-

Of vain hopes, of vain actions, of vain knowledge, senseless, they verily are possessed of the delusive, devilish and undivine nature.

हिन्दी अनुवाद :-

वे व्यर्थ आशा , व्यर्थ कर्म और व्यर्थ ज्ञानवाले विक्षिप्तचित्त अज्ञानीजन राक्षसी , आसुरी और मोहिनी प्रकृती को ही धारण किये रहते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

त्यांच्या आशा , कर्मे व ज्ञान ही सर्व व्यर्थ असतात . ते विवेकशून्य होऊन , मोह पाडणाऱ्या राक्षसी व आसुरी प्रकृतीचा आश्रय घेतात .

विनोबांची गीताई :-

ते आशा - वाद मूढांचे कर्मे ज्ञानें हि तीं वृथा
संपत्ति ज़ोडिली ज्यांनीं आसुरी मोह - कारक ॥ ९ - १२ ॥

महात्मानः तु माम् पार्थ दैवीम् प्रकृतिम् आश्रिताः ।

भजन्ति अनन्यमनसः ज्ञात्वा भूतादिम् अव्ययम् ॥ ९ - १३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
महात्मानः	Mahaa-AatmaanaH	great souls	महात्माजन	महात्मे
तु	Tu	but	परन्तु	परंतु
माम्	Maam	Me	मुझको	मला
पार्थ	Paartha	O Arjuna	हे अर्जुन	हे अर्जुना !
दैवीम्	Daiviim	divine	दैवी	दैवी
प्रकृतिम्	Prakrutim	nature	प्रकृतिके	प्रकृती
आश्रिताः	AashritaaH	refuged in / possessed of	आश्रित	आश्रय घेणारे
भजन्ति	Bhajanti	worship	निरन्तर भजते हैं	भजतात
अनन्यमनसः	Ananya-ManasaH	with unwavering mind	अनन्य मनसे युक्त होकर	एकनिष्ठ मनाने
ज्ञात्वा	Dnyaatvaa	having known	जानकर	यथार्थपणे जाणून
भूतादिम्	Bhootaadim	source of beings	सब भूतोंका सनातन कारण	सर्व प्राणिमात्रांचे मूळ कारण
अव्ययम्	Avyayam	imperishable	नाशरहित अक्षरस्वरूप	नाशरहित अक्षरस्वरूप

अन्वय :-

हे पार्थ ! दैवीम् प्रकृतिम् आश्रिताः महात्मानः तु माम् भूतादिम् अव्ययम् ज्ञात्वा , अनन्यमनसः (माम्) भजन्ति ॥ ९ - १३ ॥

English translation:-

O Arjuna! But great souls, partaking of the divine nature, worship Me with a single mind, knowing Me as the immutable and the source of all beings.

हिन्दी अनुवाद :-

परन्तु हे अर्जुन ! दैवी प्रकृति के आश्रित महात्माजन मुझ को सब भूतों का सनातन कारण और नाशरहित अक्षरस्वरूप जानकर अनन्य मन से युक्त होकर निरन्तर भजते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! दैवी प्रकृतीचा (स्वभावाचा) आश्रय घेतलेले महात्मे , मी सर्व प्राणिमात्रांचे आदि कारण आहे आणि मी अविनाशी आहे हे जाणून अनन्य भावाने मला भजतात .

विनोबांची गीताई :-

दैवी संपत्ति ज़ोडूनि महात्मे भज़ती मज़

अनन्य भावें ज़ाणूनि मी विश्वारंभ शाश्वत ॥ ९ - १३ ॥

सततम् कीर्तयन्तः माम् यतन्तः च दृढव्रताः ।

नमस्यन्तः च माम् भक्-त्या नित्ययुक्ताः उपासते ॥ ९ - १४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सततम्	Satatam	always	निरन्तर	निरंतर
कीर्तयन्तः	KeertayantaH	glorifying	मेरे नाम और गुणोंका कीर्तन करते हुए	माझे नाम व गुण यांचे कीर्तन करणारे
माम्	Maam	Me	मुझको (बार-बार)	मला
यतन्तः	YatantaH	striving	यत्न करते हुए	प्रयत्न करणारे
च	Cha	and	तथा (मेरी प्राप्तिके लिये)	तसेच
दृढव्रताः	DruDha-VrataaH	firm in vows	दृढ निश्चयवाले भक्तजन	दृढ निश्चय असणारे
नमस्यन्तः	NamasyantaH	prostrating	प्रणाम करते हुए	प्रणाम करणारे
च	Cha	and	और	आणि
माम्	Maam	Me	मेरी	माझी
भक्-त्या	BhaktyaaH	with devotion	अनन्य प्रेमसे	अनन्य प्रेमाने
नित्ययुक्ताः	Nitya-YuktaaH	always steadfast	सदा मेरे ध्यानमें युक्त होकर	नेहमी माझ्या ध्यानात युक्त होऊन
उपासते	Upaasate	worship	उपासना करते हैं	उपासना करतात

अन्वय :-

(ते) नित्ययुक्ताः भक्-त्या माम् सततम् कीर्तयन्तः यतन्तः च दृढव्रताः नमस्यन्तः च माम् उपासते ॥ ९ - १४ ॥

English translation:-

Glorifying Me always, striving, firm in vows, prostrating before Me, they worship Me with ever steadfast devotion.

हिन्दी अनुवाद :-

वे दृढ निश्चयवाले भक्तजन निरन्तर मेरे नाम और गुणों का कीर्तन करते हुए तथा मेरी प्राप्ति के लिये यत्न करते हुए और मुझ को बार - बार प्रणाम करते हुए, सदा मेरे ध्यान में युक्त होकर अनन्य प्रेम से मेरी उपासना करते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

यत्नशील, दृढव्रत आणि नित्ययुक्त होऊन ; ते साधक - महात्मे , कीर्तन व वंदन करीत, माझी निरंतर उपासना करतात.

विनोबांची गीताई :-

अखंड कीर्तनें माझ्या यत्न - शील दृढ - व्रती

भक्तीनें मज़ वंदूनि भज़ती नित्य ज़ोडिले ॥ ९ - १४ ॥

ज्ञानयज्ञेन च अपि अन्ये यजन्तः माम् उपासते ।

एकत्वेन पृथक्-त्वेन बहुधा विश्वतः - मुखम् ॥ ९ - १५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ज्ञानयज्ञेन	Dnyaana-Yadnyena	by sacrifice of knowledge	ज्ञानयज्ञके द्वारा	ज्ञानयज्ञाने
च	Cha	and	और	आणि (दुसरे पुरुष)
अपि	Api	and	भी मेरी उपासना करते हैं	सुद्धा
अन्ये	Anye	others	दूसरे ज्ञानयोगी	दुसरे (ज्ञानयोगी)
यजन्तः	YajantaH	sacrificing	पूजन करते हुए	पूजन करीत
माम्	Maam	Me	मुझ (निर्गुण निराकार ब्रह्मकी)	मज (निर्गुण निराकार ब्रह्माची)
उपासते	Upaasate	worship	उपासना करते हैं	उपासना करतात
एक - त्वेन	Eka - Tvena	by one	अभिन्नभावसे	अभिन्न भावाने
पृथक् - त्वेन	Pruthak - Tvena	as different / distinct	पृथक् भावसे	पृथक भावाने
बहुधा	Bahudhaa	in various ways / by manifold	बहुत प्रकारसे स्थित	पुष्कळ प्रकाराने
विश्वतः - मुखम्	VishvataH - Mukham	facing all directions	मुझ विराटस्वरूप परमेश्वरकी	विराट स्वरूप परमेश्वराची (नाना प्रकारांनी उपासना करतात)

अन्वय :-

अन्ये च अपि ज्ञानयज्ञेन यजन्तः एकत्वेन , पृथक्-त्वेन , बहुधा विश्वतः - मुखम् माम् उपासते ॥ ९ - १५ ॥

English translation:-

Yet others sacrificing by the Yadnya (sacrifice) of knowledge, worship Me as one, as distinct and as manifold facing all directions.

हिन्दी अनुवाद :-

दूसरे ज्ञानयोगी मुझ निर्गुण निराकार ब्रह्म का ज्ञानयज्ञ के द्वारा अभिन्नभाव से पूजन करते हुए भी मेरी उपासना करते हैं और दूसरे मनुष्य बहुत प्रकार से स्थित मुझ विराटस्वरूप परमेश्वर की पृथक् भाव से उपासना करते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

काही महात्मे ज्ञानयज्ञाने माझी उपासना करतात. त्यातही काही महात्मे अभेदभावाने तर काही महात्मे द्वैतभावाने आणि दुसरे महात्मे मला विश्वव्यापी समजून अनेक प्रकारे माझी उपासना करतात.

विनोबांची गीताई :-

दुसरे ज्ञान यज्ञानें भजती व्यापका मज़

ब्रह्म - भावें विवेकानें अविरोधें चि देखुनी ॥ ९ - १५ ॥

अहम् क्रतु अहम् यज्ञः स्वधा अहम् अहम् औषधम् ।

मन्-त्रः अहम् अहम् एव आज्यम् अहम् अग्निः अहम् हुतम् ॥ ९ - १६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अहम्	Aham	I (am)	मैं हूँ	मी
क्रतु	Kratu	Vedic ritual	क्रतु	श्रौतयज्ञ
अहम्	Aham	I (am)	मैं हूँ	मी
यज्ञः	YadnyaH	sacrifice	यज्ञ	स्मार्तयज्ञ
स्वधा	Svadhaa	ancestral offering	स्वधा	पितृयज्ञ
अहम्	Aham	I (am)	मैं हूँ	मी
अहम्	Aham	I (am)	मैं हूँ	मी
औषधम्	AuShadham	medicinal herb	ओषधी	औषधी
मन्-त्रः	MantraH	chant / sacred syllable	मन्त्र	मंत्र
अहम्	Aham	I (am)	मैं हूँ	मी
अहम्	Aham	I (am)	मैं हूँ	मी
एव	Eva	alone	ही हूँ	केवळ
आज्यम्	Aajyam	clarified butter / ghee	धृत	तूप
अहम्	Aham	I (am)	मैं हूँ	मी
अग्निः	AgniH	fire	अग्नि	अग्नी
अहम्	Aham	I (am)	मैं हूँ	मीच (आहे)
हुतम्	Hutam	burnt offering	हवनरूप क्रिया	हवनरूप क्रिया

अन्वय :-

अहम् क्रतु , अहम् यज्ञः , अहम् स्वधा , अहम् औषधम्, अहम् मंत्रः , अहम् एव आज्यम् , अहम् अग्निः , अहम् हुतम् (अस्मि) ॥ ९ - १६ ॥

English translation:-

I am Vedic ritual, I am sacrifice, I am ancestral offering, I am medicinal herb, I am chant, I am clarified butter, I am fire and I am burnt offering.

हिन्दी अनुवाद :-

क्रतु मैं हूँ , यज्ञ मैं हूँ , स्वधा मैं हूँ , औषध मैं हूँ , मन्त्र मैं हूँ , घृत मैं हूँ , अग्नि मैं हूँ और हवनरूप क्रिया भी मैं ही हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

मी श्रौत आणि स्मार्त यज्ञस्वरूपाने असून पितृयज्ञामध्ये दिले जाणारे स्वधा नावाचे अन्नही मीच आहे . सर्व प्राणिमात्र जे अन्न खातात तेही मीच आहे . ज्याच्या सहाय्याने हवन केले जाते ते मंत्र , तसेच यज्ञामधील आज्य म्हणजे तूपही मीच आहे . मी अग्निस्वरूपाने असून मीच आहुतीही आहे .

विनोबांची गीताई :-

मी चि संकल्प मी यज्ञ स्वावलंबन अन्न मी
मंत्र मी हव्य तें मी चि अग्नि मी मी चि अर्पण ॥ ९ - १६ ॥

पिता अहम् अस्य जगतः माता धाता पितामहः ।

वेद्यम् पवित्रम् ओङ्कारः ऋक् साम यजुः एव च ॥ ९ - १७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
पिता	Pitaa	father	पिता	पिता
अहम्	Aham	I (am)	मैं	मी
अस्य	Asya	of this	इस (सम्पूर्ण)	या
जगतः	JagataH	world	जगत् का	(संपूर्ण) जगाचा
माता	Maataa	mother	माता	माता
धाता	Dhaataa	sustainer	धाता अर्थात् धारण करनेवाला	धारण करणारा
पितामहः	PitaamahaH	grandfather	पितामह	पितामह (आजोबा)
वेद्यम्	Vedyam	that which is to be known	जाननेयोग्य	जाणण्यास योग्य
पवित्रम्	Pavitram	purifier	पवित्र	पवित्र
ओङ्कारः	OMkaaraH	The syllable Om	ओंकार	ॐकार
ऋक्	Rik	Rig-Veda	ऋग्वेद	ऋग्वेद
साम	Saama	Sama-Veda	सामवेद	सामवेद
यजुः	YajuH	Yaju-Veda	यजुर्वेद	यजुर्वेद
एव	Eva	also	ही हूँ	सुद्धा
च	Cha	and	और / भी	आणि

अन्वय :-

अहम् अस्य जगतः माता , पिता , धाता , पितामहः , वेद्यम् (वस्तु) , पवित्रम् (वस्तु) , ॐकारः , ऋक् , साम , यजुः एव च (अस्मि) ॥ ९ - १७ ॥

English translation:-

I am the father of this world, I am the mother, I am the sustainer, I am the grandfather, I am that entity, which is to be known; I am mono syllable Om, I am Riga-Veda, I am Sama-Veda and I am Yajur-Veda as well.

हिन्दी अनुवाद :-

इस सम्पूर्ण जगत् का धाता अर्थात् धारण करनेवाला एवं कर्मों के फल को देनेवाला , पिता , माता , पितामह , जानने योग्य , पवित्र ॐकार तथा ऋग्वेद , सामवेद और यजुर्वेद भी मैं ही हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

ह्या जगताचा माता , पिता , धाता (आधार) , पितामह (आजा) , वेद्य (ज्ञेयवस्तू), पवित्र वस्तू , ॐकार , ऋग्वेद , सामवेद आणि यजुर्वेद मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

मी ह्या जगास आधार माय बाप वडील मी

मी तिन्ही वेद ॐकार ज्ञाणण्या योग्य पावन ॥ ९ - १७ ॥

गतिः भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणम् सुहृत् ।

प्रभवः प्रलयः स्थानम् निधानम् बीजम् अव्ययम् ॥ ९ - १८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
गतिः	GatiH	goal	प्राप्त होनेयोग्य परम धाम	उद्दिष्ट
भर्ता	Bhartaa	supporter	भरण पोषण करनेवाला	(सर्वांचे) भरण पोषण करणारा
प्रभुः	PrabhuH	the Lord	सबका स्वामी	(सर्वांचा) स्वामी
साक्षी	Saakshii	witness	शुभाशुभका देखनेवाला	शुभ आणि अशुभ पाहणारा
निवासः	NivaasaH	abode	सबका वास्तवस्थान	(सर्वांचे) निवासस्थान
शरणम्	SharaNam	shelter	शरण लेनेयोग्य	आश्रय
सुहृत्	Suhrut	friend	प्रत्युपकार न चाहकर हित करनेवाला	प्रत्युपकाराची इच्छा न धरता सर्वांचे हित करणारा
प्रभवः	PrabhavaH	origin	सबकी उत्पत्ति	(सर्वांची) उत्पत्ती करणारा
प्रलयः	PralayaH	dissolution	प्रलयका हेतु	प्रलय
स्थानम्	Sthaanam	substratum	स्थितिका आधार	स्थितीचा आधार
निधानम्	Nidhaanam	treasure house	निधान	निधान
बीजम्	Beejam	seed	कारण भी मैं ही हूँ	बीज
अव्ययम्	Avyayam	imperishable	और अविनाशी	अविनाशी

अन्वय :-

अहम् गतिः , भर्ता , प्रभुः , साक्षी , निवासः , शरणम् , सुहृत् , प्रभवः , प्रलयः , स्थानम् , निधानम् , अव्ययम् , बीजम् (च अस्मि) ॥ ९ - १८ ॥

English translation:-

I am the goal, I am the supporter, I am the witness, I am the shelter, I am the friend, I am the origin, I am the dissolution, I am the substratum, I am the treasure-house, I am the imperishable seed.

हिन्दी अनुवाद :-

प्राप्त होने योग्य परम धाम , भरण पोषण करनेवाला , सब का स्वामी , शुभाशुभ का देखनेवाला , सब का वास्तवस्थान , शरण लेने योग्य , प्रत्युपकार न चाहकर हित करनेवाला , सब की उत्पत्ति प्रलय का हेतु , स्थिति का आधार , निधान और अविनाशी कारण भी मैं ही हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

प्राप्त करण्यास योग्य असे उद्दिष्ट , पोषणकर्ता , स्वामी , द्रष्टा , सर्वांचा आधार , शरणस्थान , उपकारकर्ता , उत्पत्तिस्थितिलय - कारण , विश्वाचे अस्तित्व आणि अविनाशी बीज मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

साक्षी स्वामी सखा भर्ता निवास गति आसरा
करीं हरीं धरीं मी चि ठेवा मी बीज अक्षय ॥ ९ - १८ ॥

तपामि अहम् अहम् वर्षम् निगृह्णामि उत्सृजामि च ।

अमृतम् एव च मृत्युः च सत् असत् च अहम् अर्जुन ॥ ९ - १९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तपामि	Tapaami	give heat	सूर्यरूप से तपता हूँ	सूर्यरूपाने ताप देतो
अहम्	Aham	I (am)	मैं	मी
अहम्	Aham	I (am)	मैं ही	मी
वर्षम्	VarSham	rain	वर्षाका	पर्जन्य
निगृह्णामि	NigruhNaami	withhold	आकर्षण करता हूँ	आकर्षण करतो
उत्सृजामि	Utsrujaami	send forth	उसे बरसाता हूँ	वर्षाव करतो
च	Cha	and	और	आणि
अमृतम्	Amrutam	immortality	अमृत	अमरत्व
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	also	ही	सुद्धा
च	Cha	and	और	आणि
मृत्युः	MrutyuH	death	मृत्यु हूँ	मृत्यू
च	Cha	and	और	आणि
सत्	Sat	being	सत्	व्यक्त
असत्	Asat	non-being	असत्	अव्यक्त
च	Cha	and	भी	सुद्धा
अहम्	Aham	I (am)	मैं ही हूँ	मी (च आहे)
अर्जुन	Arjuna	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !

अन्वय :-

हे अर्जुन ! अहम् तपामि , अहम् वर्षम् , निगृह्णामि उत्सृजामि च , अहम् एव अमृतम् मृत्युः च , (अहम् एव) सत् असत् च (अस्मि) ॥ ९ - १९ ॥

English translation:-

O Arjuna! I give the heat, I withhold and send forth the rain, I am the immortality and the death; I am being as well as non-being.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं ही सूर्यरूप से तपता हूँ, वर्षा का आकर्षण करता हूँ और उसे बरसाता हूँ। हे अर्जुन! मैं ही अमृत और मृत्यु हूँ और सत्- असत् भी मैं ही हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! मी सूर्यरूपाने उष्णता देतो आणि मीच पाऊस धरून ठेवतो तसेच पाऊस पाडतो . मीच अमृत आणि मृत्यू असून सत् आणि असत् (व्यक्त आणि अव्यक्त) आहे.

विनोबांची गीताई :-

तापतों सूर्य रूपें मी सोडितों वृष्टि खेंचितों
मृत्यु मी आणि मी मोक्ष असें आणि नसें हि मी ॥ ९ - १९ ॥

त्रैविद्याः माम् सोमपाः पूतपापाः यज्ञैः इष्ट्वा स्वर्गतिम् प्रार्थयन्ते ।

ते पुण्यम् आसाद्य सुर - इन्द्र - लोकम् अश्नन्ति दिव्यान् दिवि देव - भोगान् ॥ ९ - २० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
त्रैविद्याः	TraividyaaH	the knowers of three Vedas	तीन वेदोंमें पारंगत	तीन वेदांचे जाणकार
माम्	Maam	Me	मुझको	माझी
सोमपाः	SomapaaH	drinkers of herbal juice	सोमरसको पीनेवाले	सोमरस पिणारे
पूतपापाः	puutapaapaaH	purified of sins	पापरहित पुरुष	पापरहित (पुरुष)
यज्ञैः	YadnaiH	by sacrifices	यज्ञोंके द्वारा	यज्ञांच्या द्वारा
इष्ट्वा	IShTvaa	worshipping	पूजकर	पूजा करून
स्वर्गतिम्	Svargatim	passage to heaven	स्वर्गकी प्राप्ति	स्वर्गाची प्राप्ती
प्रार्थयन्ते	Praarthayante	pray	चाहते हैं	इच्छा करतात
ते	Te	they	वे पुरुष	ते पुरुष
पुण्यम्	PuNyam	holy	अपने पुण्योंके फलस्वरूप	पुण्य
आसाद्य	Aasaadya	having reached	प्राप्त होकर	प्राप्त करून घेऊन
सुर-इन्द्र-लोकम्	Sara-Indra-Lokam	the world of the lord of gods	स्वर्गलोकको	स्वर्गलोक
अश्नन्ति	Ashnanti	enjoy	भोगते हैं	भोगतात
दिव्यान्	Divyaan	divine	दिव्य	दिव्य
दिवि	Divi	in heaven	स्वर्गमें	स्वर्गामध्ये
देव - भोगान्	Deva-Bhogaan	pleasure of gods	देवताओंके भोगोंको	देवतांचे भोग

अन्वय :-

त्रैविद्याः सोमपाः पूतपापाः माम् यज्ञैः इष्ट्वा स्वर्गतिम् प्रार्थयन्ते । ते पुण्यम् सुर - इन्द्र - लोकम् आसाद्य , दिवि दिव्यान् देव - भोगान् अश्नन्ति ॥ ९ - २० ॥

English translation:-

The knowers of three Vedas, drinkers of herbal juice Soma, purified of sins, worshipping Me by sacrifices, pray for passage to heaven. They reach the holy world of the Lord of the gods and enjoy the divine pleasures of gods in the heaven.

हिन्दी अनुवाद :-

तीन वेदों में पारंगत (विधान किये हुए सकाम कर्मों को करनेवाले), सोमरस को पीनेवाले, पापरहित पुरुष मुझ को यज्ञों के द्वारा पूजकर स्वर्ग की प्राप्ति चाहते हैं । वे पुरुष अपने पुण्यों के फलस्वरूप , स्वर्गलोक को प्राप्त होकर , स्वर्ग में दिव्य देवताओं के भोगों को भोगते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

तिन्ही वेद जाणणारे , सोम वनस्पतीचा रस पिणारे , निष्पाप लोक माझी (ईश्वराची) यज्ञाद्वारे उपासना करून स्वर्ग प्राप्तीसाठी प्रार्थना करतात . असे लोक पुण्यकर्माच्या फळाने स्वर्गलोक प्राप्त करून स्वर्गामध्ये देवांचे स्वर्गीय भोग भोगतात.

विनोबांची गीताई :-

वेदाभ्यासी सोम - पानें पुनीत माझ्या यज्ञें इच्छिती स्वर्ग जोडूं
ते पुण्यानें जाऊनी इंद्र लोकीं तेथींचे ते भोगिती दिव्य भोग ॥ ९ - २० ॥

ते तम् भुक्-त्वा स्वर्गलोकम् विशालम् क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकम् विशन्ति ।

एवम् त्रयी धर्मम् अनुप्रपन्नाः गत-आगतम् काम-कामाः लभन्ते ॥ ९-२१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ते	Te	they	वे	ते
तम्	Tam	that	उस	त्या
भुक् - त्वा	Bhuk-tvaa	having enjoyed	भोगकर	उपभोगून
स्वर्गलोकम्	Svarga-Lokam	world of heaven	स्वर्गलोकको	स्वर्गलोक
विशालम्	Vishaalam	vast	विशाल	विशाल
क्षीणे	KsheeNe	when exhausted	क्षीण होनेपर	क्षीण झाल्यावर
पुण्ये	PuNye	(in) merit	पुण्य	पुण्य
मर्त्यलोकम्	Martya-Lokam	world of mortals	मृत्युलोकको	मृत्युलोकात
विशन्ति	Vishanti	enter	प्राप्त होते हैं	प्राप्त होतात
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
त्रयी - धर्मम्	Trayee - Dharmam	injunctions of three Vedas	तीनों वेदोंमें कहे हुए सकाम कर्मका	तीन वेदांत सांगितलेल्या सकाम कर्मांचा
अनुप्रपन्नाः	Anu-PrapannaaH	abiding by	आश्रय लेनेवाले	आश्रय घेणारे
गत - आगतम्	Gata-Aagatam	(the state of) going and returning	बार बार आवागमनको	गमन आगमन
काम - कामाः	Kaama-KaamaaH	desiring objects of desires	भोगोंकी कामनावाले पुरुष	भोगांची कामना असणारे
लभन्ते	Labhante	attain	प्राप्त होते हैं	प्राप्त करून घेतात

अन्वय :- ते तम् विशालम् स्वर्गलोकम् भुक् - त्वा , पुण्ये क्षीणे (सति) मर्त्यलोकम् विशन्ति । एवम् त्रयी धर्मम् अनुप्रपन्नाः काम - कामाः गत - आगतम् लभन्ते ॥ ९ - २१ ॥

English translation:-

They, having enjoyed that vast world of heaven, their merit (Punya) already exhausted, enter the world of mortals; thus by the injunctions of the three (Vedas), desiring objects of desires, they attain the state of going and returning.

हिन्दी अनुवाद :- वे उस विशाल स्वर्गलोक को भोगकर पुण्य क्षीण होनेपर मृत्युलोक को प्राप्त होते हैं । इस प्रकार स्वर्ग के साधनरूप तीनों वेदों में कहे हुए सकाम कर्म का आश्रय लेनेवाले और भोगों की कामनावाले पुरुष बार - बार आवागमन को प्राप्त होते हैं अर्थात् पुण्य क्षीण होनेपर मृत्युलोक में आते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

विशाल असा स्वर्गलोक भोगून पुण्यसंचयाचा क्षय झाल्यावर , ते पुन्हा मृत्युलोकात जन्म घेतात . याप्रमाणे तिन्ही वेदांचे अनुयायी असणाऱ्या कामोपभोगी लोकांना जन्ममृत्युरूपी संसाराची प्राप्ती होते .

विनोबांची गीताई :-

त्या स्वर्गातें भोगुनी ते विशाळ क्षीणें पुण्यें मृत्यु - लोकास येती
ऐसे निष्ठा ठेवुनी वेद - धर्मीं येणें ज्ञाणें ज़ोडिती काम - मूढ ॥ ९ - २१ ॥

अनन्याः चिन्तयन्तः माम् ये जनाः पर्युपासते ।

तेषाम् नित्य - अभियुक्तानाम् योग - क्षेमम् वहामि अहम् ॥ ९ - २२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अनन्याः	AnanyaaH	without others	अनन्यप्रेमी	एकनिष्ठ होऊन
चिन्तयन्तः	ChintayantaH	thinking	निरन्तर चिन्तन करते हुए	चिंतन करीत
माम्	Maam	Me	मुझ परमेश्वरको	मला (परमेश्वराला)
ये	Ye	who	जो	जे
जनाः	JanaaH	persons	भक्तजन	भक्तजन
पर्युपासते	Paryupaasate	worship	निष्कामभावसे भजते हैं	भजतात
तेषाम्	TeShaam	of them	उन	त्या (पुरुषांचा)
नित्य - अभियुक्तानाम्	Nitya - Abhi - Yuktaanaam	Ever seeking union (with the Self)	नित्य निरन्तर मेरा चिन्तन करनेवाले पुरुषोंका	नित्यनिरंतर माझे चिंतन करणाऱ्या
योग - क्षेमम्	Yoga - Kshemam	the supply of what is not possessed and preservation of what is already possessed	योगक्षेम	योगक्षेम
वहामि	Vahaami	carry / convey	प्राप्त कर देता हूँ	त्यांना प्राप्त करून देतो
अहम्	Aham	I	मैं	मी

अन्वय :-

अनन्याः चिन्तयन्तः ये जनाः माम् पर्युपासते , तेषाम् नित्य - अभियुक्तानाम् योग - क्षेमम् अहम् वहामि ॥ ९ - २२ ॥

English translation:-

To those persons who worship Me thinking of nothing else, to those ever seeking union with the Self, I secure for them which is not in their possession (the union / Yoga) and preserve for them what is already in their possession (the Supreme Bliss / Kshema).

हिन्दी अनुवाद :-

जो अनन्यप्रेमी भक्तजन मुझ परमेश्वर को निरन्तर चिन्तन करते हुए निष्कामभाव से भजते हैं , उन नित्य - निरन्तर मेरा चिन्तन करनेवाले पुरुषों का योगक्षेम मैं प्राप्त कर देता हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

जे अनन्यभावाने माझे चिंतन करीत मला भजतात त्या नित्ययोगयुक्त भक्तांचा योगक्षेम (प्रपंचनिर्वाह) मी चालवितो .

विनोबांची गीताई :-

अनन्य भावें चिंतूनी भजती भक्त जे मज
सदा मिसळले त्यांचा मी योग क्षेम चालवीं ॥ ९ - २२ ॥

ये अपि अन्य देवताभक्ताः यजन्ते श्रद्धया अन्विताः ।

ते अपि माम् एव कौन्तेय यजन्ति अविधिपूर्वकम् ॥ ९ - २३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ये	Ye	who	जो	जे
अपि	Api	even	यद्यपि	जरी
अन्य	Anya	other	दूसरे	दुसऱ्या
देवताः	DevataaH	gods	देवताओंको	देवता
भक्ताः	BhaktaaH	devotees	सकाम भक्त	(सकाम) भक्त
यजन्ते	Yajante	worship	पूजते हैं	पूजन करतात
श्रद्धया	Shraddhayaa	with abiding faith	श्रद्धासे	श्रद्धेने
अन्विताः	AnvitaaH	endowed	युक्त	युक्त
ते	Te	they	वे	ते
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
माम्	Maam	Me	मुझको	माझी (च)
एव	Eva	alone	ही	केवळ
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
यजन्ति	Yajanti	worship	पूजते हैं किन्तु उनका वह पूजन	पूजा करतात (परंतु त्यांचे ते पूजन)
अविधिपूर्वकम्	A-Vidhi-Purvakam	contrary to traditional practice	अविधिपूर्वक अर्थात् अज्ञानपूर्वक है	अशास्त्रोक्त (अविधिपूर्वक / अज्ञानपूर्वक असते)

अन्वय :-

अपि ये श्रद्धया अन्विताः भक्ताः अन्य देवताः यजन्ते , ते अपि , हे कौन्तेय ! अविधिपूर्वकम् माम् एव यजन्ति ॥ ९ - २३ ॥

English translation:-

O Arjuna, even those devotees who, endowed with abiding faith, worship other gods, worship Me alone, even by the wrong method which is contrary to traditional practice.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! यद्यपि श्रद्धा से युक्त जो सकाम भक्त दूसरे देवताओं को पूजते हैं वे भी मुझ को ही पूजते हैं किन्तु उन का वह पूजन अविधिपूर्वक अर्थात् अज्ञानपूर्वक है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! जे दुसऱ्या देवतांचे श्रद्धेने पूजन करतात , ते विधीहीन म्हणजे अज्ञानपूर्वक असले तरी माझीच भक्ती करतात .

विनोबांची गीताई :-

श्रद्धा पूर्वक जे कोणी यजिती अन्य दैवतें
यजिती ते हि मातें चि परी मार्गास सोडुनी ॥ ९ - २३ ॥

अहम् हि सर्व यज्ञानाम् भोक्ता च प्रभुः एव च ।

न तु माम् अभिजानन्ति तत्त्वेन अतः च्यवन्ति ते ॥ ९ - २४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अहम्	Aham	I (am)	मैं	मी
हि	Hi	indeed	क्योंकी	कारण
सर्व	Sarva	all	सम्पूर्ण	संपूर्ण
यज्ञानाम्	Yadnyaanaam	of sacrifices	यज्ञोंका	यज्ञांचा
भोक्ता	Bhoktaa	enjoyer	भोक्ता	भोक्ता
च	Cha	and	और	आणि
प्रभुः	PrabhuH	Lord	स्वामी	स्वामी
एव	Eva	also	ही हूँ	सुद्धा
च	Cha	and	और	आणि
न	Na	not	नहीं	नाही
तु	Tu	but	परन्तु	परंतु
माम्	Maam	Me	मुझ परमेश्वर को	मला (परमेश्वराला)
अभिजानन्ति	Abhi-Jaananti	know	जानते	जाणतात
तत्त्वेन	Tattvena	in reality	तत्त्वे से	तत्त्वतः
अतः	AtaH	hence	इसीसे	म्हणून
च्यवन्ति	Chyavanti	fall	गिरते हैं अर्थात् पुनर्जन्म को प्राप्त होते हैं	पतन पावतात (पुनर्जन्म प्राप्त करून घेतात)
ते	Te	they	वे	ते

अन्वय :-

अहम् हि सर्व यज्ञानाम् भोक्ता च प्रभुः एव च (अस्मि) , माम् तु तत्त्वेन न अभिजानन्ति , अतः ते च्यवन्ति ॥ ९ - २४ ॥

English translation:-

I am indeed the Enjoyer and also the Lord of all sacrifices but they do not know Me in reality; hence they fall.

हिन्दी अनुवाद :-

क्योंकी सम्पूर्ण यज्ञों का भोक्ता और स्वामी भी मैं ही हूँ परन्तु वे मुझ परमेश्वर को तत्त्व से नहीं जानते इसी से गिरते हैं अर्थात् पुनर्जन्म को प्राप्त होते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

खरे पाहता सर्व यज्ञांचा भोक्ता आणि नियंता मीच आहे ; परंतु ते मला तत्त्वतः जाणत नसल्यामुळे , ते पतन पावतात म्हणजेच परमपुरुषार्थापासून च्युत होतात .

विनोबांची गीताई :-

भोक्ता मी सर्व यज्ञांचा फल दाता हि मी चि तो
नेणती तत्व हें माझें म्हणूनि पडती चि ते ॥ ९ - २४ ॥

यान्ति देवव्रताः देवान् पितॄन् यान्ति पितृव्रताः ।

भूतानि यान्ति भूतेज्याः यान्ति मद्याजिनः अपि माम् ॥ ९ - २५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यान्ति	Yaanti	go	प्राप्त होते हैं	प्राप्त होतात
देवव्रताः	Deva-VrataaH	worshippers of gods	देवताओंको पूजनवाले	देवतांचे पूजन करणारे
देवान्	Devaan	to gods	देवताओंको	देवांना
पितॄन्	Pitroon	to ancestors	पितरोंको	पितरांना
यान्ति	Yaanti	go	प्राप्त होते हैं	प्राप्त होतात
पितृव्रताः	Pitru-VrataaH	worshippers of ancestors	पितरोंको पूजनेवाले	पितरांचे पूजन करणारे
भूतानि	Bhutaani	to the elements	भूतोंको	प्राणिमात्रांना
यान्ति	Yaanti	go	प्राप्त होते हैं	प्राप्त होतात
भूतेज्याः	BhuutejyaaH	worshippers of the elements	भूतोंको पूजनेवाले	प्राणिमात्रांची पूजा करणारे
यान्ति	Yaanti	go	प्राप्त होते हैं	प्राप्त होतात
मद्याजिनः	MadyaajinaH	those who worship Me	मेरा पूजन करनेवाले भक्त	माझे पूजन करणारे भक्त
अपि	Api	also	ही	सुद्धा
माम्	Maam	Me	मुझको प्राप्त होते हैं	मलाच (प्राप्त होतात म्हणून माझ्या भक्तांचा पुनर्जन्म होत नाही.)

अन्वय :-

देवव्रताः देवान् यान्ति , पितृव्रताः पितॄन् यान्ति , भूतेज्याः भूतानि यान्ति , मद्याजिनः अपि माम् यान्ति ॥ ९ - २५ ॥

English translation:-

Those who worship the gods go to gods, the worshippers of ancestors go to the ancestors, the worshippers of the elements go to the elements and those who worship Me come to Me.

हिन्दी अनुवाद :-

देवताओं को पूजनवाले देवताओं को प्राप्त होते हैं , पितरों को पूजनेवाले पितरों को प्राप्त होते हैं , भूतों को पूजनेवाले भूतों को प्राप्त होते हैं और मेरा पूजन करनेवाले भक्त मुझ को ही प्राप्त होते हैं । इसलिये मेरे भक्तों का पुनर्जन्म नहीं होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

देवतांचे व्रत करणारे देवतांना प्राप्त होतात . पितरांचे पूजन करणारे पितरांना प्राप्त होतात . भूतप्रेतादिकांचे उपासक भूतप्रेतांना जाऊन मिळतात आणि माझे यजन करणारे मला (ईश्वराला) प्राप्त होतात .

विनोबांची गीताई :-

देवांचे भक्त देवांस पितरांचे तयांस चि
भूतांचे भक्त भूतांस माझे हि मज पावती ॥ ९ - २५ ॥

पत्रम् पुष्पम् फलम् तोयम् यः मे भक्-त्या प्रयच्छति ।

तत् अहम् भक्ति उपहृतम् अश्नामि प्रयत आत्मनः ॥ ९ - २६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
पत्रम्	Patram	leaf	पत्र	पान
पुष्पम्	PuShpam	flower	पुष्प	फूल
फलम्	Phalam	fruit	फल	फळ
तोयम्	Toyam	water	जल आदि	पाणी (इत्यादी)
यः	YaH	who	जो कोई भक्त	जो (कोणी भक्त)
मे	Me	To Me	मेरे लिये	मला
भक्-त्या	Bhaktyaa	with devotion	प्रेमसे	प्रेमाने
प्रयच्छति	Prayachchhati	offers	अर्पण करता है	अर्पण करतो
तत्	Tat	that	वह पत्र पुष्पादि	ते पान फूल इत्यादी वस्तू
अहम्	Aham	I	मैं सगुणरूपसे प्रकट होकर	मी (सगुणरूपाने प्रगट होऊन)
भक्ति	Bhakti	with abiding faith	प्रेमपूर्वक	प्रेमपूर्वक
उपहृतम्	Upahrutam	offered	अर्पण किया हुआ	अर्पण केलेले
अश्नामि	Ashnaami	eat / accept	खाता हूँ	खातो
प्रयत - आत्मनः	Prayata - AatmanaH	of striving self	उस शुद्धबुद्धि निष्काम प्रेमी भक्तका	शुद्ध अंतःकरणाच्या (निष्काम प्रेमी अशा भक्ताने)

अन्वय :-

यः पत्रम् , पुष्पम् , फलम् , तोयम् भक्-त्या मे प्रयच्छति ; (तस्य) प्रयत - आत्मनः , भक्ति - उपहृतम् तत् अहम् अश्नामि ॥ ९ - २६ ॥

English translation:-

Whosoever with devotion offers Me a leaf, a flower, a fruit or water; I accept that devout offering of the striving self.

हिन्दी अनुवाद :-

जो कोई भक्त मेरे लिये प्रेम से पत्र , पुष्प , फल , जल आदि अर्पण करता है ; उस शुद्धबुद्धि निष्काम प्रेमी भक्त का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह पत्र पुष्पादि मैं सगुणरूप से प्रकट होकर प्रीतिसहित खाता हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

जो मला (ईश्वराला) पान , फूल , फळ अथवा पाणी भक्तीने अर्पण करतो; त्या शुद्धचित्त पुरुषाने , भक्तीने अर्पण केलेल्या पदार्थाचा , मी मोठ्या प्रेमाने स्वीकार करतो.

विनोबांची गीताई :-

पत्र वा पुष्प ज़ो प्रेमें फळ वा जळ दे मज़

तें त्या पवित्र भक्ताचें अर्पिलें खाय मी सुखें ॥ ९ - २६ ॥

यत् करोषि यत् अश्नासि यत् जुहोषि ददासि यत्।

यत् तपस्यसि कौन्तेय तत् कुरुष्व मद् - अर्पणम् ॥ ९ - २७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यत्	Yat	whatever	तुम जो	जे
करोषि	KaroShi	(you) do	कर्म करते हो	तू कर्म करतोस
यत्	Yat	whatever	तुम जो	जे
अश्नासि	Ashnaasi	(you) eat	खाते हो	तू खातोस
यत्	Yat	whatever	तुम जो	जे
जुहोषि	JuhoShi	(you) offer in sacrifice	हवन करते हो	तू हवन करतोस
ददासि	Dadaasi	(you) give	दान देते हो	तू दान देतोस
यत्	Yat	whatever	तुम जो	जे
यत्	Yat	whatever	तुम जो	जे
तपस्यसि	Tapasyasi	(you) practise austerity	तप करते हो	तू तप करतोस
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
तत्	Tat	that	वह सब	ते सर्व
कुरुष्व	KuruShva	(you) do	करो	कर
मद्-अर्पणम्	Mad-ArpaNam	offering to Me	मुझको अर्पण	तू मला अर्पण

अन्वय :-

हे कौन्तेय ! यत् करोषि , यत् अश्नासि , यत् जुहोषि , यत् ददासि , यत् तपस्यसि तत् मद् - अर्पणम् कुरुष्व ॥ ९ - २७ ॥

English translation:-

O Arjuna, whatever you do, whatever you eat, whatever you offer, whatever you give, whatever austerity you practise, do that as an offering to Me.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! तुम जो कर्म करते हो , जो खाते हो , जो हवन करते हो , जो दान देते हो और जो तप करते हो वह सब मुझको अर्पण करो ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! तू जे करतोस , जे खातोस , जे हवन करतोस , जे दान देतोस व जे तप करतोस ; ते सर्व मला तू अर्पण कर .

विनोबांची गीताई :-

ज़ें खासी होमिसी देसी ज़ें ज़ें आचरिसी तप

ज़ें कांहीं करिसी कर्म तें करीं मज़ अर्पण ॥ ९ - २७ ॥

शुभ अशुभ फलैः एवम् मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः ।

संन्यासयोग युक्तात्मा विमुक्तः माम् उप - एष्यसि ॥ ९ - २८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
शुभ	Shubha	good	शुभ	शुभ
अशुभ	Ashubham	evil	अशुभ	अशुभ
फलैः	PhalaiH	of results	फलरूप	फलांनी
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
मोक्ष्यसे	Mokshyase	(you) shall be freed	मुक्त हो जाओगे	मुक्त होशील
कर्मबन्धनैः	Karma-BandhanaiH	from bonds of actions	कर्मबन्धन से	कर्मबंधनातून
संन्यासयोग	Sannyaasa-Yoga	Yoga of renunciation	ऐसे संन्यासयोग से	संन्यासयोगाने
युक्तात्मा	Yuktaatmaa	seeking union	युक्त चित्तवाले तुम	योगयुक्त
विमुक्तः	VimuktaH	liberated	मुक्त होकर	त्यातून मुक्त (होऊन)
माम्	Maam	to Me	मुझ को	मलाच
उप - एष्यसि	Up-EShyasi	(you) shall come	ही प्राप्त हो जाओगे	प्राप्त करून घेशील

अन्वय :-

एवम् (कृते सति) शुभ - अशुभ - फलैः कर्मबन्धनैः मोक्ष्यसे , संन्यासयोग - युक्तात्मा विमुक्तः (भूत्वा) माम् उप – एष्यसि ॥ ९ - २८ ॥

English translation:-

Thus you shall be free from the bondage of actions yielding good and bad results. With the mind firmly set in the yoga of renunciation and being liberated, you shall come to Me.

हिन्दी अनुवाद :-

इस प्रकार समस्त कर्म मुझ भगवान को अर्पण करते हुए, ऐसे संन्यासयोग से युक्त चित्तवाले तुम , शुभाशुभ फलरूप कर्मबन्धन से मुक्त हो जाओगे और उन से मुक्त होकर , मुझ को ही प्राप्त हो जाओगे ।

मराठी भाषान्तर :-

अशा प्रकारे सर्व कर्मे मला (ईश्वराला) अर्पण केल्यावर शुभाशुभ कर्मबंधनातून तू मुक्त होशील . ज्याचे अंतःकरण कर्मफलाचा संन्यास , ह्याच योगाने युक्त आहे असा तू , शरीरत्यागानंतर मलाच (ईश्वराला) प्राप्त होशील .

विनोबांची गीताई :-

अशानें तोडुनी सर्व कर्म - बंध शुभाशुभ

योग - संन्यास सांधूनि मिळसी मज़ मोकळा ॥ ९ - २८ ॥

समः अहम् सर्वभूतेषु न मे द्वेष्यः अस्ति न प्रियः ।

ये भजन्ति तु माम् भक्-त्या मयि ते तेषु च अपि अहम् ॥ ९ - २९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
समः	SamaH	same	समभावसे व्यापक	समभावाने (व्यापक)
अहम्	Aham	I (am)	मैं हूँ	मी आहे
सर्वभूतेषु	Sarva-BhuuteShu	in all beings	सब भूतोंमें	सर्व प्राणिमात्रांमध्ये
न	Na	not	न कोई	नाही
मे	Me	to Me	मेरा	मला
द्वेष्यः	DveShyaH	hateful	अप्रिय	अप्रिय
अस्ति	Asti	is	है	आहे
न	Na	not	न कोई	नाही
प्रियः	PriyaH	dear	प्रिय	प्रिय
ये	Ye	who	जो भक्त	जे (भक्त)
भजन्ति	Bhajanti	worship	भजते हैं	भजतात
तु	Tu	but	परन्तु	परंतु
माम्	Maam	Me	मुझको	मला
भक्-त्या	Bhaktyaa	with devotion	प्रेमसे	प्रेमाने
मयि	Mayi	in Me	मुझमें हैं	माझ्यामधे असतात
ते	Te	they	वे	ते
तेषु	TeShu	in them	उनमें प्रत्यक्ष प्रकट हूँ	त्यांच्यामध्ये (प्रत्यक्ष प्रकट असतो)
च	Cha	and	और	आणि
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
अहम्	Aham	I	मैं	मी

अन्वय :-

अहम् सर्वभूतेषु समः, मे द्वेष्यः प्रियः च न अस्ति, (परं) तु ये माम् भक्-त्या भजन्ति, ते मयि, (च) अहम् अपि तेषु (च) ॥ ९ - २९ ॥

English translation:-

I am the same in all beings. To me there is no one dear and no one hateful. But those who worship Me with devotion, they are in Me and I am also in them.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं सब भूतों में समभाव से व्यापक हूँ न कोई मेरा अप्रिय है और न प्रिय है। परन्तु जो भक्त मुझ को प्रेम से भजते हैं, वे मुझ में हैं और मैं भी उन में प्रत्यक्ष प्रकट हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

मी सर्वमात्रांच्याकडे समभावाने पाहतो; त्यामुळे मला कोणीही अप्रिय नाही किंवा प्रिय सुद्धा नाही. परंतु जे मला भक्तिभावाने भजतात; ते माझ्यामध्ये आणि मी त्यांच्यामध्ये आहे.

विनोबांची गीताई :-

सम मी सर्व भूतांस प्रियाप्रिय नसे मज़

परी प्रेम - बळें राहे भक्त माझ्यांत त्यांत मी ॥ ९ - २९ ॥

अपि चेत् सुदुराचारः भजते माम् अनन्यभाक् ।

साधुः एव सः मन्तव्यः सम्यक् व्यवसितः हि सः ॥ ९ - ३० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अपि	Api	even	यदि	सुद्धा
चेत्	Chet	if	कोई भी	जर
सुदुराचारः	Su-duraachaaraH	a very wicked person	अतिशय दुराचारी	अतिशय दुराचारी
भजते	Bhajate	worships	भजता है	भजतो
माम्	Maam	Me	मुझको	मला
अनन्यभाक्	Ananya-Bhaak	with devotion to no one else	अनन्यभावसे मेरा भक्त होकर	एकनिष्ठ भावाने
साधुः	SaadhuH	a righteous person	साधु	साधू
एव	Eva	verily	ही	च
सः	SaH	he	तो वह	तो
मन्तव्यः	MantavyaH	(shall) be regarded	मानने योग्य है	समजण्यास योग्य
सम्यक्	Samyak	rightly	यथार्थ	यथार्थपणे
व्यवसितः	VyavasitaH	resolved	निश्चयवाला है	चांगला निश्चय केलेला (की परमेश्वराच्या भजनासमान असे अन्य काही सुद्धा नाही)
हि	Hi	indeed	क्योंकि	कारण
सः	SaH	he	वह	त्याने

अन्वय :-

सुदुराचारः अपि माम् अनन्यभाक् भजते चेत्, सः साधुः एव मन्तव्यः, सः हि सम्यक् व्यवसितः (अस्ति) ॥ ९ - ३०॥

English translation:-

Even if a very wicked person worships Me with unswerving devotion, he too shall be reckoned as righteous one as he has rightly resolved.

हिन्दी अनुवाद :-

यदि कोई अतिशय दुराचारी भी अनन्यभाव से मेरा भक्त होकर मुझ को भजता है तो वह साधु ही मानने योग्य है क्योंकि वह यथार्थ निश्चयवाला है अर्थात् उसने भलीभाँति निश्चय कर लिया है कि परमेश्वर के भजन के समान अन्य कुछ भी नहीं है।

मराठी भाषान्तर :-

जर एखादा अत्यंत दुराचारी मनुष्य सुद्धा अनन्यभावाने मला भजत असेल, तर तो (सदाचरण संपन्न) साधूच आहे असे मानावे; कारण त्याचा निश्चय बुद्धीपूर्वक आहे.

विनोबांची गीताई :-

असो मोठा दुराचारी भज़े मज़ अनन्य ज़ो
मानावा तो ज़सा साधु त्याचा सुंदर निश्चय ॥ ९ - ३०॥

क्षिप्रम् भवति धर्मात्मा शश्वत् शान्तिम् निगच्छति ।

कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥ ९ - ३१॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
क्षिप्रम्	Kshipram	soon	शीघ्र ही	लवकरच
भवति	Bhavati	(he) becomes	हो जाता है और	होतो
धर्मात्मा	Dharmaatmaa	righteous	वह धर्मात्मा	(तो पुरुष) धर्मात्मा
शश्वत्	Shashvat	eternal	सदा रहनेवाली	सदा टिकून राहणारी
शान्तिम्	Shaantim	peace	परम शान्तिको	परम शांती
निगच्छति	Nigachchhati	(he) attains to	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
प्रतिजानीहि	Pratijaaniihi	know for certain	तुम निश्चयपूर्वक यह सत्य जान लो	निश्चयपूर्वक समज
न	Na	not	नहीं	नाही
मे	Me	My	कि मेरा	माझा
भक्तः	BhaktaH	devotee	भक्त	भक्त
प्रणश्यति	PraNashyati	is destroyed	कभी नष्ट होता है	नष्ट होतो

अन्वय :-

हे कौन्तेय ! (सः) क्षिप्रम् धर्मात्मा भवति , शश्वत् शान्तिम् निगच्छति , मे भक्तः न प्रणश्यति , (इति त्वम्) प्रतिजानीहि ॥ ९ - ३१ ॥

English translation:-

Soon he becomes a righteous person and attains eternal peace. O Arjuna! Know that certainly my devotee never perishes!

हिन्दी अनुवाद :-

वह शीघ्र ही धर्मात्मा हो जाता है और सदा रहनेवाली परम शान्ति को प्राप्त होता है। हे अर्जुन ! तुम निश्चयपूर्वक यह सत्य जान लो कि मेरा भक्त कभी नष्ट नहीं होता है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! तो लवकरच धर्मात्मा होतो आणि निरंतर शांतीला प्राप्त होतो . माझा भक्त कधीही नाश पावत नाही , हे तू निश्चित जाण .

विनोबांची गीताई :-

शीघ्र तो होय धर्मात्मा शांति शाश्वत मेळवी
ज़ाण निश्चित तूं माझा भक्त नाश न पावतो ॥ ९ - ३१ ॥

माम् हि पार्थ व्यपाश्रित्य ये अपि स्युः पापयोनयः ।

स्त्रियः वैश्याः तथा शूद्राः ते अपि यान्ति पराम् गतिम् ॥ ९ - ३२॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
माम्	Maam	Me	मेरे	मला
हि	Hi	indeed	क्योंकि	कारण
पार्थ	Paartha	O Partha	हे अर्जुन	हे अर्जुना !
व्यपाश्रित्य	Vyapaashritya	having taken refuge in Me	शरण होकर	मला शरण येऊन
ये	Ye	who	जो कोई	जे
अपि	Api	even	भी	ही / सुद्धा
स्युः	SyuH	May be	हों	असोत
पापयोनयः	Paapa-YonayaH	of sinful birth	पापयोनि चाण्डालादि	पापयोनीमध्ये
स्त्रियः	StriyaH	women	स्त्री	स्त्रिया
वैश्याः	VaishyaaH	traders	वैश्य	वैश्य
तथा	Tathaa	also	तथा	तसेच
शूद्राः	ShudraaH	labourers	शूद्र	शूद्र
ते	Te	they	वे	ते
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
यान्ति	Yaanti	attain	प्राप्त होते हैं	प्राप्त करून घेतात
पराम्	Paraam	the supreme	परम	श्रेष्ठ
गतिम्	Gatim	Goal	गतिको ही	गती

अन्वय :-

हे पार्थ ! ये अपि हि पापयोनयः स्त्रियः वैश्याः तथा शूद्राः स्युः , ते अपि माम् व्यपाश्रित्य , पराम् गतिम् यान्ति ॥ ९ - ३२॥

English translation:-

O Arjuna, for those who take refuge in Me, even though of sinful birth - women, traders and even labourers – they also attain the Supreme Goal.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! स्त्री , वैश्य , शूद्र तथा पापयोनि चाण्डालादि जो कोई भी हों वे भी मेरे शरण होकर परमगति को ही प्राप्त होते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! कारण , माझा आश्रय स्वीकारल्याने स्त्रिया , वैश्य , शूद्र किंवा नीच कुळात जन्मलेले देखील उत्तम गतीला पावतात .

विनोबांची गीताई :-

धरूनी आसरा माझा भोळे स्त्री - वैश्य - शूद्र हि
कीं पाप योनि ज़े जीव ते हि मोक्षास पावती ॥ ९ - ३२॥

किम् पुनः ब्राह्मणाः पुण्याः भक्ताः राजर्षयः तथा ।

अनित्यम् असुखम् लोकम् इमम् प्राप्य भजस्व माम् ॥ ९ - ३३॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
किम् पुनः	Kim PunaH	how much more	फिर इसमें तो कहना ही क्या है	मग हे काय सांगावयास पाहिजे
ब्राह्मणाः	BraahmaNaaH	predominantly pure minded people	ब्राह्मण	ब्राह्मण
पुण्याः	PuNyaaH	holy	जो पुण्यशील	पुण्यशील
भक्ताः	BhaktyaaH	devout	भक्तजन	भक्तजन
राजर्षयः	RaajarShayaH	royal-sages	राजर्षि	राजर्षी
तथा	Tathaa	also	तथा	तसेच
अनित्यम्	Anityam	impermanent / transient	क्षणभङ्गुर	क्षणभंगुर
असुखम्	Asukham	unhappy / joyless	सुखरहित	सुखरहित
लोकम्	Lokam	world	(मनुष्य शरीरको) मृत्युलोकमें	जग
इमम्	Imam	this	इस	हे
प्राप्य	Praapya	having obtained	प्राप्त होकर	प्राप्त झाल्यावर
भजस्व	Bhajasva	worship	भजन करो	तू भजन कर
माम्	Maam	Me	निरन्तर मेरा ही	माझे

अन्वय :-

किम् पुनः पुण्याः भक्ताः ब्राह्मणाः तथा राजर्षयः ? (तस्मात् त्वम्) अनित्यम् असुखम् इमम् लोकम् प्राप्य, माम् भजस्व ॥ ९ - ३३॥

English translation:-

How much more than holy Brahmins and devout royal-sages! (It is indeed easy for these types of people to attain Godhood.) Having come to this transient and always unhappy world, you better worship Me.

हिन्दी अनुवाद :-

फिर इस में तो कहना ही क्या है, जो पुण्यशील ब्राह्मण तथा राजर्षि भक्तजन मेरी शरण होकर परमगति को प्राप्त होते हैं। इसलिये तुम सुख रहित और क्षणभङ्गुर इस मृत्युलोक में, मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर, निरन्तर मेरा ही भजन करो ।

मराठी भाषान्तर :-

मग जे पुण्यवान भक्त, ब्राह्मण आणि राजर्षिगण आहेत त्यांचे तर काय सांगावे? (ते माझ्या स्वरूपाला निश्चितच येणार.) हे अर्जुना! तू क्षणभंगूर आणि सुखरहित मृत्युलोकात (जन्म पावला) आहेस म्हणून माझे भजन कर.

विनोबांची गीताई :-

तेथें ब्रह्मर्षि राजर्षि ह्यांची गोष्ट कशास ती

भज तूं मज आलास लोकीं दुःख - द नश्वर ॥ ९ - ३३॥

मन्मनाः भव मद् - भक्तः मद् - याजी माम् नमस्कुरु ।

माम् एव एष्यसि युक्-त्वा एवम् आत्मानम् मत् - परायणः ॥ ९ - ३४॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मन्मनाः	ManmanaaH	with mind in Me	मुझमें मनवाला	माझ्या ठिकाणी मन असलेला
भव	Bhava	be (you become)	हो जाओ	तू हो
मद् - भक्तः	Mad-BhaktaH	My devotee	मेरा भक्त बन जाओ	माझा भक्त
मद् - याजी	Mad-Yaajee	sacrificer	मेरा पूजन करनेवाला हो जाओ	माझे पूजन करणारा
माम्	Maam	unto Me	मुझको	मला
नमस्कुरु	Namaskuru	bow down	प्रणाम करो	प्रणाम कर
माम्	Maam	to Me	मुझको	मला
एव	Eva	alone	ही	च / सुद्धा
एष्यसि	EShyasi	(you) shall come	प्राप्त हो जाओगे	तू प्राप्त करून घेशील
युक्-त्वा	Yuktvaa	having united	नियुक्त करके	माझ्या ठिकाणी नियुक्त करून
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
आत्मानम्	Aatmaanam	the Self	आत्माको मुझमें	आत्म्याला
मत् - परायणः	Mat-ParaayaNaH	taking Me as the Supreme Goal	मेरे परायण होकर तुम	मत्परायण होऊन

अन्वय :-

(त्वम्) मन्मनाः , मद् - भक्तः , मद् - याजी (च) भव , माम् नमस्कुरु , मत् - परायणः (सन्) एवम् आत्मानम् युक्-त्वा माम् एव एष्यसि ॥ ९ - ३४॥

English translation:-

With mind in Me, be devoted to Me, sacrificing unto Me; bow down to Me. Having thus united with Me, taking Me as the Supreme Goal, you shall attain the Godhood.

हिन्दी अनुवाद :-

मुझ में मनवाला हो जाओ , मेरा भक्त बन जाओ , मेरा पूजन करनेवाला हो जाओ और मुझ को प्रणाम करो । इस प्रकार आत्मा को मुझ में नियुक्त करके , मेरे परायण होकर , तुम मुझ को ही प्राप्त हो जाओगे ।

मराठी भाषान्तर :-

माझ्या ठिकाणी मन लाव , माझा भक्त हो , माझी उपासना कर आणि मला नमस्कार कर . याप्रमाणे मत्परायण होऊन आत्म्याचा माझ्याशी (ईश्वराशी) योग केल्याने तू मलाच प्राप्त होशील .

विनोबांची गीताई :-

प्रेमानें ध्यास घेऊनि यजीं मज़ नमीं मज़

असें ज़ोडूनि आत्म्यास मिळसी मज़ मत्पर ॥ ९ - ३४॥

ॐ तत् सत् इति श्रीमद् भगवद् गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायाम् योगशास्त्रे

श्रीकृष्णार्जुन संवादे राजविद्या राजगुह्य योगो नाम नवमोऽध्यायः॥

हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् ।

Om that is real. Thus, in the Upanishad of the glorious Bhagwad Geeta, the knowledge of Brahman, the Supreme, the science of Yoga and the dialogue between Shri Krishna and Arjuna this is the nineth discourse designated as "the Yoga of Royal Knowledge and Royal Secret".

नवव्या अध्यायाचा एका श्लोकात मथितार्थ

भक्तीनें जल पत्र पुष्प फल की कांही दुजे अर्पिलें ।

ते माते प्रिय तेंचि जे नर सदा मत्कीर्तनीं रंगले ॥

पार्था ते मुख धन्य ज्या मुखिं वसे मन्नाम संकीर्तन

विष्णो ! कृष्ण ! मुकुंद ! माधव ! हरे ! गोविंद ! नारायण ॥ ९॥

गीता सुगीता कर्तव्या किम् अन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।

या स्वयम् पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करण्याजोगी आहे म्हणजेच गीता उत्तम प्रकारे वाचून तिचा अर्थ आणि भाव अन्तःकरणात साठवणे हे कर्तव्य आहे . स्वतः पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णूंच्या मुखकमलातून गीता प्रगट झाली आहे . मग इतर शास्त्रांच्या फाफटपसाऱ्याची जरूरच काय ?

- श्री महर्षी व्यास

विनोबांची गीताई :-

गीताई माउली माझी तिचा मी बाळ नेणता ।

पडतां रडतां घेई उचलूनि कडेवरी ॥